International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

नवीन कृषक आंदोलन और परिणाम : एक समीक्षा

Dr. Jyoti Arun

Associate Professor, Political Science, SRLS Govt. PG College, Kaladera, Jaipur, Rajasthan, India

सार

कृषि नीति को बदलने के लिये किये गये आन्दोलन नवीन कृषक आन्दोलन (Improved Peasant movement) कहलाते हैं।कृषक आन्दोलन का इतिहास बहुत पुराना है और विश्व के सभी भागों में अलग-अलग समय पर किसानों ने कृषि नीति में परिवर्तन करने के लिये आन्दोलन किये हैं ताकि उनकी दशा सुधर सके। मोजुदा दौर में भारत में कृषक आंदोलन तेज गति से बढ़ रहे है इसका मुख्य कारण कृषक की आर्थिक हालत दिन प्रति दिन कमजोर हो रही है और वो कर्ज के मकड़ जाल में फंस रहा क्यों की मौजूद दौर में कृषि में लागत बढ़ रही है आमदनी घट रही है जिस कारण से किसानो में आत्म हत्या की घटनाए बढ़ रही है। दूसरी तरफ लोग कृषि निति बदलवाने के लिए संघर्ष कर रहे है। बर्ष 2017 में देश में छोटे बड़े सैकड़ो आंदोलन देश में हुए है सरकार को कृषि के सम्बन्ध में बोलने पर मजबूर किया है जिस में महारास्ट्र का जून 17 मेंगाँव बन्द हो चाहे नासिक से मुम्बई तक का मार्च हो राजस्थान में पानी व् बिजली के सवालो पर आंदोलन हरियाणा में 2015 में नरमें की फसल के खराबे पर मुअब्जे की मांग का आंदोलन हो तमिलनाडु के किसानो का महीनो तक संसद मार्ग पर धरना आदि मुख्यत रहे है ।२०२० से २०२१ तक तीन फार्म बिल्ज़ के ख़िलाफ़ आंदोलन चल रही है।

परिचय

विजय का भाव मूलत: स्वयंस्फूर्त होता है. एक अहिंसक संघर्ष की विजय का महत्व अनूठा. भारत के किसान अन्दोलन ने जहां एक ओर पूरे विश्व को शांतिपूर्वक जनतंत्रिक अन्दोलन में अपने हकों के लिए कुर्बानी का एक नया दृष्टीकोण सौंपा है[1] वहीं लोकतंत्र में बहुमत से सत्ता की स्थापना व अहंकार की अवधारणा को ध्वस्त भी किया है.भारत के शांतिपूर्वक व्यवस्थित किसान अन्दोलन ने धरती की अस्मिता व कृषक समाज की परंपराओं, संयम, बलिदान की क्षमता के साथ-साथ कृषि के अस्तित्व एवं महत्व को नीतियों और राजनीति के केंद्र में स्थापित कर दिया है.पूंजीपति विचारधारा की पालक सत्ताओं के छद्म विकास व औद्योगीकरण के आर्थिक सिद्धांत के समांतर कृषि अर्थव्यवस्था के महत्व को सैद्धांतिक रूप से पुन: स्पष्ट किया है.इस अन्दोलन का प्रभाव [2]व्यापक रूप से विश्व के राजनीतिक क्षितिज तक पड़ना लाजमी है. इस अन्दोलन ने सामाजिक न्याय की अवधारणा को नया आयाम दिया है. भारत की राजनीति जो पिछले कुछ दशकों से वृहद सामूहिकता के सरोकारों से इतर धार्मिक आकांक्षाओं व वर्ग-प्रतिस्पर्धा पर आन टिकी थी ये उसके लिए भी परिवर्तन का बिन्दु है.[3]

विचार-विमर्श

पंजाब में सियासी करवट की पूरी संभावना है. पंजाब किसान बहुल प्रदेश है. किसान जत्थेबन्दियां आंदोलन के चलते बहुत सूझ-बूझ से मजबूत हो कर उभरी हैं. [4]चालीस विभिन्न जत्थेबन्दियों को जो समर्थन पंजाब की कृषि से जुड़ी जनता ने दिया है वो विलक्षण है. इस अन्दोलन का प्रभाव आने वाले विधानसभा के चुनावों मे एक नयी भूमिका निभाएगा. जिस प्रकार किसानों ने केन्द्र की सत्ता की चूलें हिला दीं उसी प्रकार प्रदेश के राजनीतिक दलों को भी कठघरे में खड़ा करने से वे चूकेंगे नहीं.पूरे पंजाब में हर विधानसभा क्षेत्र में किसान अन्दोलन का प्रभाव गांव-गांव तक गहरा है[5]. इस आंदोलन ने समाज के सभी वर्गों व जातियों को जिस तरह से एक बार फिर से साथ ला दिया उसे राजनीतिक दल इन चुनावों में शायद ही बांट पाएं.संयुक्त किसान मोर्चा एक बड़ी ताकत के रूप में उभरा है जिसका राजनीतिक दल अभी मूल्यांकन नहीं कर पा रहे हैं. किसान अन्दोलन ने जहां एक ओर जनता को उनकी ताकत का अहसास करवा दिया है तो दूसरी ओर सत्ता की जवाबदेही को भी सुनिश्चित कर दिया है.[6] पिछले कई दशकों से चली आ रही पारंपरिक राजनीति व वर्चस्ववादिता को अबकी बार विराम लगा कर नयी राजनीतिक भूमिका की परिभाषा धरातल पर आना तय है. इस अन्दोलन से पंजाब ने अपनी प्रगति व उत्थान के लिए राजनीतिक नेताओं को बाध्य कर दिया है कि कोरे आश्वासनों का समय व भविष्य अब राजनीति में नहीं चलने वाला. सरोकार की प्रतिबद्धता व परिणाम ही राजनीति की नयी इबारत है.[7]

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

परिणाम

इस समय नवीन कृषि अधिनियमों के कारण किसानो का सम्पूर्ण देश में आंदोलन जारी है। हाल ही में किसानो ने दिल्ली में इन कृषि अधिनियमों के विरुद्ध प्रदर्शन किया। उपनिवेशी भारत में भी कई बार किसानो ने अपनी मांग के कारण आंदोलन किये हैं। हाल ही में सरकार द्वारा नवीन कृषि अधिनियमों को लाया गया है। इन अधिनियमों के फलस्वरूप किसानो का गुस्सा सम्पूर्ण देश में प्रदर्शन के रूप में सामने आया है। किसान न सिर्फ देश का अन्नदाता है बल्कि भारत के स्वाधीनता आंदोलन में जिन लोगों ने शीर्ष स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, उनमें किसानों का भी अहम योगदान रहा है।आधुनिक भारतीय इतिहास में ऐसे कई अवसर हैं जब किसानो ने विभिन्न विभिन्न समयो पर आंदोलन के द्वारा अपनी मांगो को सरकारों के समक्ष रखा है।[8]

आधुनिक भारतीय इतिहास में किसान आंदोलन

नील आंदोलन :-

- इस आंदोलन का प्रारम्भ बंगाल के गोविंदपुर गांव में 1859 को आरम्भ हुआ था। बंगाल के किसान अपने खेतो में चावल की खेती करना चाहते थे परन्तु उन्हें यूरोपीय नील की खेती के लिए विवश कर रहे थे।
- इस स्थिति में स्थानीय नेता दिगंबर विश्वास तथा विष्णु विश्वास के नेतृत्व में किसानो ने विद्रोह कर दिया। इस आंदोलन में हिन्दू तथा मुसलमान सभी किसान सम्मिलित थे। अन्ततः सरकार को नील के कारखाने बंद करने पड़े तथा सरकार ने 1860 में नील आयोग का गठन कर जाँच का आदेश दिया। आयोग का निर्णय किसानो के पक्ष में रहा।[9]
- इस आंदोलन का वर्णन दीनबंधु मित्र ने अपने नाटक नीलदर्पण में किया है।

- पबाना विद्रोह

- यह आंदोलन 1873 -76 में ज़मींदारो द्वारा किसानो के शोषण के विरुद्ध आरम्भ हुआ। इसमें किसानो ने पबाना जिले के युसूफशाही परगने में किसान संघ का गठन किया। यह आन्दोलन ईशान चंद्र राय ,केशवचंद्र राय इस आंदोलन के प्रमुख नेता रहे।
- यद्यपि यह आंदोलन ज़मींदार तथा साहूकार विरोधी था न कि उपनिवेशवाद विरोधी। बाकिमचन्द्र चटर्जी ,द्वारिकानाथ गांगुली जैसे नेताओ ने इसका समर्थन किया था।[10]

- दक्कन का विद्रोह :

- कृषक आंदोलन मात्र उत्तर भारत में ही सीमित नहीं रहे बल्कि यह दक्षिण में भी फैले क्योंकि महाराष्ट्र के पूना एवं अहमदनगर जिलों में साहूकार किसानों का शोषण कर रहे थे।इसके साथ ही सरकार ने रैय्यतवाड़ी व्यवस्था के अंतर्गत करो को बढ़ा दिया था। अमेरिका में नागरिक युद्ध की समाप्ति के समय बढ़ाये गये कर जब युद्ध समाप्ति के उपरान्त भी कम नहीं किये गए तब किसानो का गुस्सा बढ़ा।
- इसी समय दिसंबर सन् 1874 में एक सूदखोर कालूराम ने किसान (बाबा साहिब देशमुख) के खिलाफ अदालत से घर की नीलामी की डिक्री प्राप्त कर ली। इस पर किसानों आंदोलन शुरू कर दिया। इसमें महाजन ,साहूकारो के दूकान से सामान खरीदना ,उनके घर काम करना तथा उनके खेतो में काम करने से किसानो ने इंकार कर दिया
- इस आंदोलन को शांत करने के लिए सरकार ने "दक्कन कृषक राहत अधिनियम " द्वारा किसानो को साहूकारों के विरुद्ध संरक्षण दिया। तब यह आंदोलन शांत हुआ।[11]

- चम्पारण किसान विद्रोह :-

- यह आंदोलन तिनकठिया प्रणाली के विरोध में बिहार के चम्पारण नामक स्थान पर शुरू हुआ था। इस पद्धति में चम्पारण के किसानों से अंग्रेज बागान मालिकों ने एक अनुबंध करा लिया था, जिसके अंतर्गत किसानों को जमीन के 3/20वें हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था।
- 19वीं शताब्दी के अंत में रासायनिक रंगों की खोज और उनके प्रचलन से नील के बाजार समाप्त हो गए। परन्तु बागान मालिकों ने नील की खेती बंद कराने के लिए किसानो से अवैध वसूली की।
- इस आंदोलन में स्थानीय नेताओ ने गाँधी जी को आमंत्रित किया। गाँधी जी के आने के बाद यह आंदोलन राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

- सरकार तथा बागान मालिकों को किसानो का पक्ष सुनना पड़ा। सरकार ने इस आंदोलन को शांत करने के लिए एक आयोग का गठन किया जिसमे गाँधी जी को भी सदस्य बनाया और बागान मालिक अवैध वसूली का 25 % वापस करने पर विवस हो गए।[12]

- मोपला किसान विद्रोह :-

- यह किसान विद्रोह ज़मींदारो के विरुद्ध था। चुकी मोपला किसान मुस्लिम समुदाय से थे तथा ज़मींदार हिन्दू समुदाय से सम्बंधित थे अतः उपनिवेशी सरकार द्वारा इस आंदोलन को सांप्रदायिक रंग देने का प्रयास किया गया था।
- प्रारम्भ में यह विद्रोह अंग्रेज़ हुकूमत के ख़िलाफ था। महात्मा गांधी, शौकत अली, मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे नेताओं का सहयोग इस आंदोलन को प्राप्त था। इस आन्दोलन के मुख्य नेता के रूप में 'अली मुसलियार' थे। यह आंदोलन असहयोग तथा खिलाफत आंदोलन के समकालीन था।[13]

- खेड़ा सत्याग्रह

- यह आंदोलन 1918 में खेड़ा (गुजरात) में आरम्भ हुआ जब सरकार फसल बर्बाद होने के उपरान्त भी कर वसूल रही थी। इस आंदोलन का नेतृत्व गाँधी जी तथा सरदार बल्लभ भाई पटेल ने किया था।
- इस आंदोलन को शांत करने के लिए गाँधी जी ने कहा की लगान देने में अक्षम किसानो से वसूली नहीं की जाए जबकि लगान देने में सक्षम किसान स्वेक्छा से पूरा लगान देंगे।[14]

- उत्तर प्रदेश में किसान आंदोलन :

- होमरूल लीग के कार्यकताओं के प्रयास तथा मदन मोहन मालवीय के दिशा निर्देशन के परिणामस्वरूप फरवरी, सन् 1918 में उत्तर प्रदेश में 'किसान सभा' का गठन किया गया। सन् 1919 के अंतिम दिनों में किसानों का संगठित विद्रोह खुलकर सामने आया।
- इस संगठन को जवाहरलाल नेहरूजी ने भी नैतिक समर्थन दिया । उत्तर प्रदेश के हरदोई, बहराइच एवं सीतापुर जिलों में लगान में वृद्धि एवं उपज के रूप में लगान वसूली को लेकर अवध के किसानों ने 'एका आंदोलन' नामक आंदोलन चलाया।[15]

बारदोली सत्याग्रह

- यह आंदोलन भी लगान में बढ़ोत्तरी के कारण आरम्भ हुआ था। यह सूरत के बारदोली में 1928 में आरम्भ हुआ था।
- इसमें सरदारबल्लभ भाई पटेल एक कुशल नेता के रूप में उभरे। इसमें उन्होंने लगान का बहिष्कार किया तथा लगान देने वाले किसानो का सामाजिक बहिष्कार का भी प्रयोग किया।

तेभागा आन्दोलन :

- किसान आन्दोलन में सन् 1946 का बंगाल का तेभागा आन्दोलन सर्वाधिक सशक्त आन्दोलन था, जिसमें किसानों ने 'फ्लाइड कमीशन' की सिफारिश के अनुरूप लगान की दर घटाकर एक तिहाई करने के लिए संघर्ष शुरू किया था।
- बंगाल का 'तेभागा आंदोलन' फसल का दो-तिहाई हिस्सा उत्पीड़ित बटाईदार किसानों को दिलाने के लिए किया गया था। इस आंदोलन के नेता कंपराम सिंह और भवन सिंह थे।[16]

तेलंगाना आंदोलन :

- इस समय तेलंगाना हैदराबाद रियासत का अंग था। यह 1946 हैदराबाद के निजाम की नीतियों के विरुद्ध कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा आरम्भ किया गया था। यह विद्रोह हिंसात्मक हो गया था तथा 1951 तक किसी न किसी रूप में चलता रहा।

किसान आंदोलनों का महत्व

- कई बार किसान आंदोलनों ने राष्ट्रीय आंदोलनों की शून्यता को भरा है।उदाहरण - 1857 के विद्रोह से 1885 में कांग्रेस की स्थापना तक नील विद्रोह ,पबाना विद्रोह तथा दक्कन विद्रोह हुए।[17]

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

- किसान आंदोलनो ने महात्मा गाँधी ,सरदार पटेल ,राजेंद्र प्रसाद तथा जैसे नेताओ को जन नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित किया।
- इन्होने स्वतंत्रता उपरान्त कृषि सुधारो के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार किया उदाहरण -स्वतंत्रता उपरान्त ज़मींदारी का विनाश।
- इन आंदोलनों ने किसानो तथा अन्य लोगो को उपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रेरित किया।[18]

गुरु पर्व और कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में आज प्रधानमंत्री ने तीनों नए कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान कर दिया. बता दें कि पिछले एक साल से किसान तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने के लिए दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलन कर रहे थे. चलिए जानते हैं क्या थे वे तीन कृषि कानून[22]

ये थे तीन नए कृषि कानून जिन्हें पीएम मोदी ने लिया आज वापस
पहला कृषि कानून- कृषि उत्पादन व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सुविधा) विधेयक 2020. इसके अनुसार किसान मनचाही जगह पर अपनी फसल बेच सकते थे. इतना ही नहीं बिना किसी अवरोध के दूसरे राज्यों में भी फसल बेच और खरीद सकते थे. कोई भी लाइसेंसधारक व्यापारी किसानों से परस्पर सहमत कीमतों पर उपज खरीद सकता था. कृषि उत्पादों का यह व्यापार राज्य सरकारों द्वारा लगाए गए मंडी कर से मुक्त किया गया था[21].
दूसरा कृषि कानून - किसान (सशक्तिकरण और संरक्षण) मूल्य आश्वासन और कृषि सेवा अधिनियम 2020 था. यह कानून किसानों को अनुबंध खेती करने और अपनी उपज का स्वतंत्र रूप से विपणन करने की अनुमति देने के लिए था. इसके तहत फसल खराब होने पर नुकसान की भरपाई किसानों को नहीं बल्कि एग्रीमेंट करने वाले पक्ष या कंपनियों द्वारा की जाती.
तीसरा कानून- आवश्यक वस्तु (संशोधन) अधिनियम.इस कानून के तहत असाधारण स्थितियों को छोड़कर व्यापार के लिए खाद्यान्न, दाल, खाद्य तेल और प्याज जैसी वस्तुओं से स्टॉक लिमिट हटा दी गई थी.
17 सितंबर 2020 को संसद में पास हुए थे तीनों कृषि कानून[19]

गौरतलब है कि इन्ही तीनों नए कृषि कानूनों को 17 सितंबर 2020 को संसद से पास कराया गया था. इसके बाद से लगातार किसान संगठनों की तरफ से विरोध कर इन कानूनों को वापस लेने की मांग की जा रही थी. किसान संगठनों का तर्क था कि इस कानून के जरिए सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को खत्म कर देगी और उन्हें उद्योगपतियों के रहमोकरम पर छोड़ देगी. जबकि, सरकार का तर्क था कि इन कानूनों के जरिए कृषि क्षेत्र में नए निवेश का अवसर पैदा होगा और किसानों की आमदनी बढ़ेगी. सरकार के साथ कई दौर की वार्ता के बाद भी इस पर सहमति नहीं बन पाई. किसान दिल्ली की सीमाओं के आसपास आंदोलन पर बैठकर इन कानूनों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे. [20]

निष्कर्ष

उपनिवेशी शासन के दौरान भी कई बार किसानो ने अपनी मांगो के लिए आंदोलन किया है। परन्तु स्वतंत्रता के बाद किसानों के नाम पर होने वाले आंदोलन या उनके आंदोलन हुए वे हिंसक और राजनीति से ज्यादा प्रेरित थे।इस समय भारत में भारत के लोगो के द्वारा चुनी हुई सरकार है वह उपनिवेशिक शोषक प्रवृत्तियों से हटकर है अतः किसानो की समस्याओ का शीघ्र निवारण किया जाएगा।पीएम मोदी ने गुरु पर्व के मौके पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए तीनों नए कृषि कानूनों को वापस लेने का ऐलान किया. पिछले एक साल से किसान संगठन इन्हीं 3 कानूनों को वापस लेने के लिए आंदोलन कर रहे थे.[23]

संदर्भ

1. मार्केट वॉच (2007), प्लास्टिक एक से अधिक तरीकों में हरे हैं
2. ↑ BIO (n।d।) औषधियों के उत्पादन के लिए बनाम खाद्य पदार्थ तथा चारे के लिए पौधों को उगाना।
3. ↑ श्रम बाजार के अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन महत्वपूर्ण संकेतक 2008, पी। 11-12
4. ↑ "https://www।cia।gov/library/publications/the-world-factbook/geos/xx।html#Econ" जाँचें `|url=` मान (मदद).
5. ↑ लैटिन शब्द लुकअप
6. ↑ लैटिन शब्द लुकअप
7. ↑ न्यूयॉर्क टाइम्स (2005), कभी कभी एक अच्छी चीज की भरपूर फसलकी बहुतायत होती है
8. ↑ न्यूयॉर्क टाइम्स (1986) विज्ञान अकादमी प्राकृतिक खेती की बहाली की सिफारिश की
9. ↑ विश्व बैंक (1995) यूरोपीय संघ में कृषि जल प्रदूषण पर काबू पाना

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

10. ↑ यूरोपीय आयोग (2003) CAP सुधार
11. ↑ न्यूयॉर्क टाइम्स (सितंबर 2007) एट टायसन एंड क्राफ्ट, अनाज की लागत मुनाफे को सीमित कर देती है
12. ↑ तेल भूल जाओ, नई वैश्विक संकट है भोजन
13. ↑ दंगों और भूख की वजह से अनाज की की मांग बढ़ गयी और उसकी कीमतों मैं बढोतरी हुई
14. ↑ आलरेडी वी हेव रायट्स, होर्डिंग्स, पेनिक: दी साइन ऑफ़ थिंग्स टू कम?
15. ↑ फीड दी वर्ल्ड? हम एक हारी हुई जंग लड़ रहे हैं, संयुक्त राष्ट्र ने कहा।
16. ↑ मिलियन फेस फेमाइन अस क्रोप डिजीज रेजेस
17. ↑ 700-billions-at-risk-from-wheat-superblight।html "Billions at risk from wheat super-blight" जाँचें |url= मान (मदद). New Scientist Magazine (issue 2598): 6–7. 3 अप्रैल 2007. अभिगमन तिथि 19 अप्रैल 2007.
18. ↑ लियोनार्ड, के जे ब्लैक स्टेम रस्ट बायोलोजी एंड थ्रेट टू व्हीट ग्रोवेर्स, USDA ARS
19. ↑ जलवायु में परिवर्तन के कारन वैश्विक खाद्य संकट उत्पन्न हो सकता है और जनसंख्या वृद्धि के कारण उपजाऊ भूमि में कमी आती जा रही है
20. ↑ अफ्रीका में 2025 तक अपनी जनसंख्या के केवल 25% भग को ही भोजन उपलब्ध करा पायेगा
21. ↑ फार्मिंग ओल्डर देन थोट | कैलगरी विश्वविद्यालय
22. ↑ दी इम्पेक्ट ऑफ़ दी पटेटो हिस्ट्री मैगजीन
23. ↑ सुपर-आकार के कसावा पौधे फ्रीका में भूख से लड़ने में मदद कर सकते हैं। ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी